इति वलच्। "वले।" ६।३।११८। इति दीर्घ:।) हस्ती। इत्यमर:। २।८।३४॥ (यथा, मनुटीकायां कुल्लूकभट्ट:। ७।१०६। "सिंह: प्रबलमतिस्थूलमपि दन्तावलं हन्तुमाक्रमति॥")

दन्तिका, स्त्री, (दन्ती एव। स्वार्थे कन् टाप् पूर्व्वह्रस्वश्च।) दन्तीवृक्ष:। इत्यमर:। २।४।१४४॥

दन्तिजा, स्त्री, दन्तिका। इति शब्दरत्नावली॥

दन्तिनी, स्त्री, (दन्तस्तदाकारो मूलेऽस्त्यस्या:। दन्त+इनि:+ङीप्।) दन्तीवृक्ष:। इति राजनिर्घण्ट:॥

दन्तिमद:, पुं, (दन्तिनो मद:।) हस्तिमद:। इति राजनिर्घण्ट:॥

दन्ती, स्त्री, (दाम्यत्यनयेति। दम+"हसिमृग्रिण्वेति।" उणां। ३।८६। इति तन्। ततो गौरादित्वात् ङीष्।) स्वनामख्यातवृक्ष:। तत्पर्य्याय:। शीघ्रा २ श्येनघण्टा ३ निकुम्भी ४ नागस्फोता ५ दन्तिनी ६ उपचित्रा ७ भद्रा ८ रूक्षा ९ रेचनी १० अनुकूला ११ नि:शल्या १२ चक्रदन्ती १३ विशल्या १४ मधुपुष्पा १५ एरण्डफला १६ तरुणी १७ एरण्डपत्रिका १८ अग्रुरेवती १९ विशोधनी २० कुम्भी २१ उडुम्बरदला २२। इति राजनिर्घण्ट:॥ निकुम्भ: २३। दन्तिका २४ प्रत्यक्‌पर्णी २५ उदुम्बरपर्णी २६। इत्यमर:। २।८।३४॥ अस्या गुणा:। कटुत्वम्। उष्णत्वम्। शूलामलगदोषार्शोव्रणाश्मरीशल्यशोधनत्वम्। दीपनत्वञ्च। इति राजनिर्घण्ट:॥ अष्ठीलिकाध्मानगुल्मोदरनाशित्वम्। सारकत्वञ्च। इति राजवल्लभ:॥ अथ लघुदन्ती।

"लघ्वी दन्ती विशल्या च स्यादुडुम्बरपर्ण्यपि।
अथैरण्डफला शीघ्रा श्येनघण्टा घुणप्रिया॥
वाराहाङ्गी च कथिता निकुम्भश्च मकूलक:॥"

अथ वृहद्दन्ती।

"एरण्डपत्रविटपा द्रवन्ती सम्बरी तथा।
चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी प्रत्यक्‌पर्ण्याखुकर्ण्यपि॥*॥
दन्तीद्वयं सरं पाके रसे च कटु दीपनम्।
गुदाङ्कुराश्मशूलास्रकण्डूकुष्ठविदाहनुत्॥
तीक्ष्णोष्णं हन्ति पित्तास्रकफशोथोदरक्रिमीन्॥
लघुदन्तीफलगुणा:।
क्षुद्रदन्तीफलं तु स्यान्मधुरं रसपाकयो:।
शीतलं हन्त्यविष्टम्भगरशोथकफापहम्॥"
इति भावप्रकाश:॥

दन्ती, [न्] पुं, (प्रशस्तौ दन्तौ स्त: अस्येति। दन्त+इनि:।) हस्ती। इत्यमर:। २।८।३४॥ (यथा, देवीभागवते। २।९।४५।
"मन्त्रिपुत्त्र: स्थितस्तत्र स्थापयामास दन्तिन:॥"
स्त्रियां ङीप्। यथा, आर्य्यासप्तशत्याम्। ६५२।
"स्वेच्छति जिगीषा समर: प्राणव्ययावधि: करिणाम्।
न विलसति कामनर्थं दन्तिनि! तव यौवनोद्भेद:॥")

दन्तीबीजं, क्ली, (दन्त्या इव बीजमस्य।) जयपाल:। इति राजनिर्घण्ट:॥

दन्तुर:, त्रि, (उन्नता दन्ता: सन्त्यस्येति। "दन्त उन्नत उरच्।" ५।२।१०६। इति उरच्।) उन्नतदन्त:। दँतो इति भाषा॥
"कदाचिद्दन्तुरो मूर्खः कदाचिल्लोमश: सुखी।
कदाचित् तुन्दिलो दु:खी कदाचिच्चञ्चला सती॥"
इति सामुद्रकम्॥
उन्नतानत:। इति मेदिनी। रे, १६६॥

दन्तुरच्छद:, पुं, (दन्तुर उन्नतानतश्छदो यस्य।) बीजपूर:। इति राजनिर्घण्ट:॥

दन्तोलूखलिक:, त्रि, (दन्त एव उलूखल:। सोऽस्यस्येति। "अत इनिठनौ।" ५।२।११५। इति ठन्।) वानप्रस्थविशेष:। दन्तमात्रेण छित्त्वा यो भक्षति स:। इति श्रीभागवतम्॥ (यथा, मनु:। ६।१७।
"अश्मकुट्टो भवेद्वापि दन्तोलूखलिकोऽपि वा॥")

दन्त्य:, त्रि, (दन्तेषु भव:। दन्त+"शरीरावयवाच्च।" ४।३।५५। इति यत्।) दन्तोद्भव:। इति व्याकरणम्॥ (यथा, शिक्षायाम्। १७।
"स्युर्मूर्द्धन्या ऋटुरषा दन्त्या लृतुलसा: स्मृता:॥"
दन्तेभ्योहित:। "शरीरावयवाद्यत्।" ५।१।६। इति यत्। दन्तहितजनक:। यथा, सुश्रुते। १।४६।
"दन्त्योऽग्निमेधाजननोऽल्पमूत्र-
स्तन्योऽथ केश्योऽनिलहा गुरुश्च॥")

दन्दशूक:, पुं, (गर्हितं दशतीति। दनश+यङ्+"यजजपदशां यङ:।" ३।२।१६६। इति ऊक:।) सर्प:। (यथा, वैद्यकरत्नमालायाम्।
"चक्षु:श्रवा दन्दशूको गूढ़पात् पन्नगोरगा:॥")
राक्षस:। इति मेदिनी। के, १६३॥ (हिंस्रे, त्रि। यथा, भट्टि:। १।२६।
"इयमति रघुसिंहे दन्दशूकान् जिघांसौ
धनुररिभिरसह्यं मुष्टिपीड़ं दधाने॥")

दनुभ, उ न दम्भे। इति कविकल्पद्रुम:॥ (स्वां-परं-अकं-सेट्। उदित्त्वात् क्त्वावेट्।) दम्भ: परवञ्चनहेतुव्यापार:। उ, दम्भित्वा दब्ध्वा। न, दभ्नोति खलम्छलयति इत्यर्थ:। इति दुर्गादास:॥

दनुभ, क ङ संघाते। इति कविकल्पद्रुम:॥ (चुरां-आत्मं-सकं-सेट्।) क ङ, दम्भयते। सङ्घातो राशीकरणम्। इति दुर्गादास:॥

दनुश, औ दंशने। इति कविकल्पद्रुम:॥ (भ्वां-परं-सकं-अनिट्।) औ, अदाङ्क्षीत्। दशति बिम्बफलं शुकशावक:। दंशनमित्यनुस्वारहीनं पठित्वा तन्निर्द्देशात् अनटि नकारलोप इत्याहु:। अतएव दशनो दन्त:। नाहिर्द्दशयते कश्चिद्विद्यया गरुड़ाख्यया। इति हलायुध:। भट्टमल्लमते दंशनमिह सन्नाह:। तेन अदंशयन्नवहितशौर्य्यदंशनास्तनूरयं नय इति दृषिभूभृत:। इति माघ:। तनू: कवचत्रताश्चक्रुरित्यर्थ:। अत्र परस्मैपदं चिन्त्यमिति वल्लभ:। वस्तुतस्तु दंशं करोतीति णौ साध्यम्। इति दुर्गादास:॥

दभ, इ क नोदे। इति कविकल्पद्रुम:॥ (चुरां-परं-सकं-सेट्।) इ क, दम्भयति। नोद: प्रेरणम्। इति दुर्गादास:॥

दभ, क नोदे। इति कविकल्पद्रुम:॥ (चुरां-परं-सकं-सेट्।) क, दाभयति। इति दुर्गादास:॥

दभ्रं, त्रि, (दभ्नोतीति। दनुभ दम्भे+"स्फायितञ्चीति।" उणां। २।१३। इति रक्।) अल्पम्। इत्यमर:। ३।१।६१॥ (यथा, निघण्टु:। ३।२। "ऋह्वन्। ह्रस्व:। निघृष्व:। मायुक:। प्रतिष्ठा। क्षुधु। वम्रक:। दभ्रम्। अर्भक:। क्षुल्लक:। अल्प इत्येकादशह्रस्वनामानि॥" यथा, ऋग्वेदे। १।८१।२।
"असि दभ्रस्य चिद्वृध:॥")
समुद्रे, पुं। इत्युणादिकोष:॥

दम, भ य उ इर् शमे। इति कविकल्पद्रुम:॥ (दिवां-परं-अकं-सकञ्च-सेट्। उदित्वात् क्त्वावेट्।) भ य, दाम्यति। उ, दमित्वा दान्त्वा। इर्, अदमत् अदमीत्। अस्मात् पुषादित्वात् नित्यं ङ इत्यन्ये। शम: शान्तीभाव:। दाम्यति मुनि:। शम इतिपदस्य शान्तस्यापि सम्भवे शान्तीकरणेऽप्ययमिति धातुप्रदीप:। दमित्वाप्यरिसङ्घातान्। इति दुर्गादास:॥

दम:, पुं, (दमनमिति। दम+भावे घञ्। "नोदात्तोपदेशस्येति।" ७।३।३४। इति वृद्ध्यभाव:।) दण्ड:। इत्यमर:। २।८।२१॥ दण्डस्य लक्षणं यथा,—
"दमनाद्दण्डनाच्चैव तस्माद्दण्डं विदुर्बुधा:।
यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति निर्भय:।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत् साधु पश्यति॥"
इति मत्स्यपुराणम्॥
(यथा, मनु:। ८।१९२।
"निक्षेपस्यापहर्त्तारं तत्समं दापयेत् दमम्॥")
तप:क्लेशसहिष्णुता। तत्पर्य्याय:। दान्ति: २ दमथ: ३। इत्यमर:। ३।२।३॥ दमनम्। तत्तु बाह्येन्द्रियनिग्रह:। इति वेदान्तसार:॥ विषयाद्व्यावृत्तस्य मनसो यथेष्टविनियोगयोग्यता। इति केचित्॥ दमस्य लक्षणं यथा,—
"कुत्सितात् कर्म्मणो विप्र! यच्च चित्तनिवारणम्।
स कीर्त्तितो दम: प्राज्ञै: समस्ततत्त्वदर्शिभि:॥"
इति पाद्मे क्रियायोगसार:॥
(यथा, मनु:। ६।९२।
"धृति: क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म्मलक्षणम्॥")
कर्द्दम:। इति मेदिनी। मे, १४॥ (गृहम्। इति निघण्टु:। ३।४॥ यथा, ऋग्वेदे। १।७५।५।
"अग्ने यक्षि स्वं दमम्॥"
महर्षिविशेष:। यथा, महाभारते। १३।२६।५।
"विश्वामित्र: स्थूलशिरा: सम्वर्त्त: प्रमतिर्दम:॥"
मरुत्तस्य राज्ञ: पुत्त्र:। यथा, भागवते। ९।२।२९।
"मरुत्तस्य दम: पुत्त्रस्तस्यासीद्राजवर्द्धन:॥"
मरुत्तस्य पौत्त्र:। इति मार्कण्डेयपुराणम्। यथा तत्रैव। १३४। १—५।